Original Research Paper Education

नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का महत्त्व

deynhi dkj | शोधकर्ती ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरू (राज

KEYWORDS Driver Distraction, Fatigue, ANN, SVM

शिक्षा ही वह प्रकाश है जो अज्ञान के अंधियारे में भटकते मानव को नई दृष्टि प्रदान करती है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो एक नवजात शिशु के रुप में असहाय व असामाजिक होता है वह न बोलता जानता है न चलन-फिरना। उस का न कोई मित्र होता है न कोई शत्रु। यही नहीं उसे समाज के रीति-रिवाजों परम्पराओं तथा संस्कृति का ज्ञान भी नहीं होता है। शिक्षा ही सही अर्थो में बालक को उसकी संस्कृति का ज्ञान कराती है। शिक्षा के द्वारा ही संस्कृति का हस्तातंरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता है। शिक्षा, शिक्षार्थी और विद्यालयों का अन्तर सम्बन्ध इतना मजबूत होता है कि बिना किसी एक के अन्य दोनों का अस्तित्व नही है। शिक्षा के महत्व को रेखांक्ति करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।"

मूल्य का अर्थ

शाब्दिक रुप से यदि देखा जाए तो मूल्य को अंग्रजी मे value कहते हैं। यह लैटिन भाषा के शाब्द Valere से बना है जिसका आंगल भाषा में अर्थ है - Ability Utility Importance योग्यता, उपयोगिता। अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका महत्व, सम्मान या उपयोग समझा जाता है, मूल्य कहलाता है।

मूल्य की परिभाषा

सी.वी. गुड :- "मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौन्दर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है लगभग सभी विचार मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते है।"

मिल्टन :- "जीवन मूल्य ओस की बूंदों के समान नही है जो मौसम के अनुसार दिखाई दे। इनकी जड़े प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती है तथा इनकी वास्तविकता से घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

फिलक :- "हम वास्तव में जिसे सम्मान देते है चाहते या महत्वपूर्ण समझते है वही मूल्य है।"

आक्सफोर्ड अंग्रेजी शाब्दकोष :- "इसमें मूल्य को महत्ता उपयोगिता वांछनीयता तथा उन गुणों के रुपों में परिभाषित किया गैया है जिन पर ये निर्भर है।"

मूल्य सम्बन्धी भारतीय दृष्टिकोण

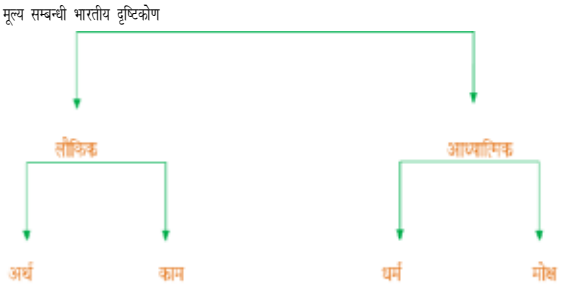

सामाजिक मूल्यों का अर्थ -

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है। यह समाज ही है जो उसे सभ्य बनाता है। जो कुछ वह सीखता है वह लगभग समाज से ही सीखता है। केवल सीखने की क्षमता उसकी अपनी होती है। समाज में ही उसकी आत्मचेतनता जागती है और वह अपने को शमानव' समझने लगता है। वह परहित में रुचि लेने लगता है। परहित का अर्थ है दूसरों की भलाई के लिये अपने व्यक्तिगत हितों का बलिदान कर देना।

समाज जीवन को सुरक्षित,सुविधाजनक एवं सभ्य बनाने के लिये सामाजिक मूल्यों का निर्माण करता है। क्योंकि मनुष्य समूहों में रहता है इसलिए उसे किसी आचार-संहिवा का पालन करना पड़ता है तांकि सभी शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें। उदाहरण स्वरुप-शचोरी मत करो' एक महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य है। शसदा सत्य बोलो' एक और सामाजिक मूल्य है। कुछ सामाजिक मूल्यों का उल्लेख नीचे किया जाता है।

१द्ध सामाजिक अनुरूपता २द्ध अनुशासन ३द्ध सामाजिक संवेदना

४द्ध परोपकार ५द्ध सहनशीलता ६द्ध सामाजिक समायोजन

७द्ध सामाजिक वफ़ादारी ८द्ध सामाजिक न्याय ९द्ध पंचशील

सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मानदण्ड, लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। सामाजिक मूल्य सामाजिक जीवन के अन्त संबंधों को परिभाषित करने में सहायक होते है। हम कह सकते हैं कि सामाजिक मूल्य वे उपकरण (TOOLs) तथा प्रतीक (Symbols) होते हैं जिनका मनुष्य ने आविष्कार किया है और जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते रहते हैं। सत्य, सुन्दरता, अच्छाई, उपयोगिता आदि से संबंधित मूल्य इसी श्रेणी में आते हैं।

सामाजिक मूल्यों की व्याख्या -

कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने सामाजिक मूल्यों को निम्न रुप में परिभाषित किया है -

थॉमस तथा जैनेनिकी - इनके अनुसार सामाजिक मूल्य वह लक्ष्य है जिसके अन्तर वस्तु तथा तक एक सामा. जिक समूह के सदस्य पहुंच सकते है। सामाजिक मूल्यों कोई गूढ़ तत्व नहीं है। जिस कि एक सामज के सदस्य समझते-बूझते न हों। सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों ही मस्तिष्क की उपज है। इसजिये ये सदस्य इन मूल्यों के संबंध में पूर्णतया अचेत नहीं होते है।

दुर्खीम - "श्री दुर्खीम ने इस धारणा पर अधिक जोर दिया है कि सामाजिक मूल्य आदर्श है। इनके अनुसार, "सामाजिक मूल्यों की विवेचना एक सामाजिक तथ्य के रुप में ही करना चाहिए। सामाजिक तथ्य, व्यवहार (विचार, अनुभव या क्रिया) का वह पक्ष है जिसका निरीक्षण वैषयिक रुप में संभव है और जो कि एक विशेष ढ़ंग से व्यवहार करने को बाध्य करता है।"

सामाजिक मूल्यों के प्रकार -

सामाजिक मूल्यों के निम्न प्रकार मुख्य रुप से उल्लेखनीय है।

प्रेम व सत्य (Love & Truth) – जीवन में सामाजिक मूल्यों का बड़ा महत्व है। सामाजिक जीवन में प्रेम सबसे बड़ा मूल्य और उसी की धूरी पर अन्य सामाजिक मूल्य घूमते हैं। सामाजिक संबंध प्रेम पर आधारित हैं। सामाजिक संबंधों को सत्य का आधार भी चाहिए। इसलिए प्रेम और सत्य दोनो उच्चतम सामाजिक मूल्य है। प्रेम व सत्य सामाजिक जीवन में सुखमय उन्नति लाते हैं। ये स्थायी शाश्वत है। प्रेम व सत्य के माध्यम से सामाजिक झगड़ों का समाधान अहिंसात्मक रुप में किया जा सकता है।

समानता (Equality) - सभी मनुष्य बराबर है। सभी में एक जैसी आत्मा है। सभी में मनुष्यता है। सभी प्रकार के सामाजिक अंतर जैसे अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, प्रशासक-प्रशासित, आदि न केवल अस्वाभाविक है बल्कि अमानवीय भी है। एक श्रमिका का कार्य भी अपनी जगह पर एक वैज्ञानिक से कम नहीं है।

सहयोग (Cooperation) - प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी योग्यता व कुशलता का समाज को योगदान दे और केवल अपने लिए ही कार्य न करें। उसे ऐसी भावना रखनी चाहिए जो कुछ उसके पास है, वह सभी का है।

सामाजिक मूल्यों का महत्व -

सामाजिक मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करने तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरुपता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं। मूल्य समाज के सदस्यों की आन्तरिक भावनाओं पर आधारित होते हैं।

सामाजिक मूल्य जीवन को वह मनोवैज्ञानिक आधार पर करते हैं। जो कि समाज व्यवस्था व संगठन के लिये आवश्यक होता है।

सामाजिक मूल्यों के आधार पर हम सामाजिक घटनाओं व सामाजिक समस्याओं का मूल्यांकन करते हैं और साथ ही सामाजिक आविष्कारों को काम में लगाते हैं।

उदाहरणार्थ, भारतीय जीवन का एक आदर्श मूल्य अहिंसा है। अहिंसा के मूल्य के अनुरुप हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन को बल्कि सामाजिक, राजनीतिक यहां तक अन्तर्राष्ट्रीय जीवन तक को ढालने का प्रयास करते हैं। भारत का युद्धों से अपने आपको दूर रखने का प्रमुख कारण अहिंसात्मक मूल्य का राजनीतिक क्षेत्र प्रभाव है। हमें व्यक्तिवादी भावनाओं से दूर रहने की शिक्षा दी जाती है। क्योंकि भारत का सामाजिक मूल्य समष्टिवाद के पक्ष में है।

स्वामी दयानन्द के विचार - शमूल्य-उन्मुख शिक्षा में माता-पिता को महान व महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। यह माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वह बच्चों को ऐसे मूल्यों का शिक्षण दें जो भारतीय शिक्षा की प्राचीन परम्पराओं द्वारा निर्देशित हैं।'

नैतिक मूल्य

श्री राधाकृष्णन के कथनानुसार शभारत सहित सारा विश्व इसलिये कठिनाइयों में गुज़र रहा है क्योंकि हमारी शिक्षा बौद्धिक व्यायाम बन कर रह गई है और उस में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं।'
आज नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का पतन हो रही है, धर्म की पकड़ कमज़ोर हो रही है, स्वार्थ के लिये शाक्ति एवं ज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है, राष्ट्रों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं है - ऐसी स्थिति में शिक्षा नैतिक मूल्यों के लिये दी जानी चाहिए।

नैतिकता उन सिद्धांतों की संहिता है जो उत्तम जीवन जीने के लिए आवश्यक है। व्यक्ति के जीवन के लिये नैतिक मूल्यों का महत्व अत्यधिक है। इन्हीं के आधार पर व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। नैतिकता ही ऐसा मरहम है जो मानवता के घावों को भरता है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा ही मनुष्य को इस बात की प्रेरणा देगी कि वह आणविक-शक्ति का प्रयोग मानव के विनाश के लिये नहीं बल्कि उस के हित के लिए करे। नैतिक मूल्य निम्नलिखित हैं -

१द्ध ईमानदारी
२द्ध सत्यता
३द्ध नैतिक स्थिरता
४द्ध अच्छा चरित्र

महात्मा गांधी का विचार - शशिक्षा हाथ, दिमाग और दिल के लिए हा. `नी चाहिए। दिल के लिये शिक्षा का अर्थ है शआध्यात्मिक प्रशिक्षण'। शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति है। इसी में जीवन एवं शिक्षा का सर्वोतम कल्याण निहित है।'

सांस्कृतिक मूल्य

प्रत्येक संस्कृति के अपने कुछ मूल्य होते है। मेकाइवर एवं पेज के कथनानुसार, संस्कृति शैलियों, मूल्यों, भावात्मक सम्बन्धों तथा बौद्धिक साहसिक कार्यो का समूह है।

अत्युत्म विचार एवं ज्ञान शसंस्कृति' है। यह आन्तरिक सौन्दर्य है, बौद्धिक परिष्कार है और व्यक्तित्व का सौन्दर्यात्मक एवं नैतिक पक्ष है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मूल्य निम्नलिखित है

1) ईश्वर में विश्वास
2) अध्यात्मवाद
3) अहिंसा
4) सहनशीलता
5) सादगी
6) समाज-सेवा
7) शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा
8) निष्काम कर्म
9) शिष्टता

रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार - शमूल्य-उन्मुख शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुये रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है, शशिक्षा की महान् उपयोगिता केवल तथ्य एकत्र करने में नहीं बल्कि मनुष्य को जानना है और मनुष्य को इस योग्य बनाना है कि वह अपने आप को जान सके।'

मूल्य परक शिक्षा के उद्देश्य -

मूल्य परक शिक्षा के निम्न उद्देश्य -

मूल्य शिक्षा के द्वारा छात्रों में सहयोग, प्रेम, करुणा, शाक्ति एवं अहिंसा, साहस, समानता, बन्धुत्व आदि मौलिक गुणों का विकास किया जा सकता है।

मूल्य शिक्षा द्वारा बालकों का एक उत्तरदायी नागरिक के रुप में प्रशिक्षित किया जा सकता है।

देश की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के संबंध में बालकों को जागरुक किया जा सकता है।

अपने साथियों के प्रति, स्वदेश के प्रति, मानवता के प्रति, धर्मो और संस्कृतियों के प्रति, जीवन और पर्यावरण के प्रति छात्रों में समुचित दृष्टिकोण का विकास मूल्यों की शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

छात्रों को स्वयं के बार में जानने के लिये प्रोत्साहित करना जिससे स्वयं में आस्था रखने में वो समर्थ हो सके।

राष्ट्रीय लक्ष्यों जैसे - समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र आदि को मूल्यों का सही बोधक माना जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के विचार - शशिक्षा मानव में पहले से विद्यमान आध्यात्मिक पूर्णता का स्पष्टीकरण है- आदर्श यह होना चाहिए कि हम देश की सम्पूर्ण शिक्षा- आध्यात्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष-को अपने हाथों में लें और जहां तक क्रियात्मक हो सके यह राष्ट्रीय दिशाओं में और राष्ट्रीय विधियों द्वारा प्रदान की जानी चाहिए। एक ऐसी संस्था होनी चाहिए जो अध्यापकों को धर्म का प्रचार करने और लोगों को धर्मनिरपेक्ष शिक्षा देने का प्रशिक्षण प्रदान करे।'

संदर्भ

1 एन.सी.ई.आर.टी की त्रेमासिक पत्रिका जनवरी, २००४।
2 अग्निहोत्री रवीन्द्र ;१९९९द्ध आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्या राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर ।
3 एन.आर. स्वरुप सक्सेना : शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त।
4 राममूर्ति आयोग ;१९६०द्ध : 'वैल्यू एज्युकेशन'।
5 मलैया के.सी. ;१९६३द्ध : ''नैतिक शिक्षा शिक्षण''।
6 वालिया जे.एस. (२००५) शशिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'' पाल पब्लिशर्ज़ जालन्धर